पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
नीतू रवि गर्ग

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी से ही है पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका -नीतू रवि गर्ग

हिंदी हमारी मातृभाषा

हिंदी हमारी मातृभाषा

हमारे देश में हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। आजादी मिलने के दो साल बाद, संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसी की याद में 1953 से हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिंदी हमारी भावनाओं से जुड़ी हुई भाषा है। इसका विकास संस्कृत से विकसित हुई प्राकृत और अपभ्रंश जैसी भाषिक परंपराओं से हुआ है। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ अनेक संस्कृतियाँ और अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। हमारी सांस्कृतिक विविधता ही हमारे देश की सबसे बड़ी विशेषता है। इन सबके बीच हिंदी एक ऐसी भाषा है, जो देश के अलग-अलग हिस्सों के लोगों को आपस में जोड़ने का काम करती है।

हमारी हिंदी भाषा बहुत ही सरल, सहज और सुगम है तथा हम भारतवासियों की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति का माध्यम है। हम अपनी भावनाओं, अपने सुख-दुःख और अपने मन की बात को हिंदी में बहुत आसानी से व्यक्त कर पाते हैं। हिंदी में अपनापन महसूस होता है और यही अपनापन इसे हमारे दिल के और करीब ले आता है। हिंदी बहुत ही प्यारी भाषा है और लोगों को एक सूत्र में पिरोकर रखने की शक्ति रखती है। हम कहीं जाते हैं तो सामने वाले की भाषा को तुरंत समझ नहीं पाते, लेकिन हिंदी के माध्यम से संवाद करना कई जगहों पर सहज हो जाता है। यही कारण है कि हिंदी का विस्तार केवल एक भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों के बीच आपसी जुड़ाव का माध्यम भी बनती जा रही है।

परंतु बड़ी दुर्भाग्य की बात है कि आजकल लोगों ने विदेशी भाषाओं को अधिक महत्व देना शुरू कर दिया है। कई लोगों को लगता है कि विदेशी भाषा, विशेषकर अंग्रेजी का अधिक प्रयोग करने से वे ज्यादा समझदार और पढ़े-लिखे कहलाएँगे। जब कोई अंग्रेजी में बातें करता है तो उसे बहुत पढ़ा-लिखा समझा जाता है, जबकि हिंदी में बात करने वाले को कई बार उतनी तवज्जो नहीं दी जाती। जिनके बच्चे अंग्रेजी में बातें करते हैं, उनके बारे में भी कहा जाता है कि उन्होंने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी है।

मेरा मानना है कि अंग्रेज तो भारत छोड़कर चले गए, लेकिन अंग्रेजी भाषा का प्रभाव हमारे बीच रह गया और हम अपनी ही भाषा को वह सम्मान देना भूलते जा रहे हैं, जिसकी वह हकदार है। दूसरी भाषा सीखना गलत नहीं है, लेकिन अपनी भाषा को कमतर समझना निश्चित रूप से उचित नहीं है।

आजकल हमारी हिंदी भाषा में भी अनेक भाषाओं के शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक होने लगा है। ये शब्द हमारी रोजमर्रा की बोलचाल में इस तरह घुल-मिल गए हैं कि बोलते समय हमें लगता ही नहीं कि ये हिंदी के शब्द नहीं हैं। जैसे—तारीख, हक, एहसान, औरत, किताब, जिक्र, तरक्की, दरवाजा, डेली, तस्वीर, चाय, चीनी, बाथरूम, वॉशबेसिन, किचन, टाइम आदि हजारों शब्द हम रोज बोलते हैं।

इनमें से बहुत से शब्द हमारी भाषा में इतने घुल-मिल गए हैं कि अगर हम इन्हें न बोलें तो हमें यह सोचने में समय लग जाए कि इनके स्थान पर कौन-सा शब्द बोलें। यही हमारी भाषा की खूबसूरती भी है कि हिंदी ने दूसरी भाषाओं के अनेक शब्दों को अपने अंदर सहजता से समाहित कर लिया है।

उदाहरण के लिए 'चाय' शब्द चीनी मूल का माना जाता है और आज यह हमारे जीवन का इतना सामान्य हिस्सा बन चुका है कि इसके लिए कोई कठिन या लंबा हिंदी शब्द बोलने की कल्पना ही अजीब लगती है। इसी तरह दूसरी भाषाओं के अनेक शब्द हमारी हिंदी में इस तरह शामिल हो चुके हैं कि अब वे हमें अपने ही लगते हैं।

अरबी, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी के अनेक शब्द हिंदी में इस तरह घुलमिल गए हैं कि इनके बिना हमारी रोजमर्रा की भाषा अधूरी-सी लगती है। बच्चों की भाषा में तो अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग और भी अधिक बढ़ गया है, क्योंकि वे अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ते हैं। अगर हम बच्चों से कहें कि तुम हमें अपनी गणित या विज्ञान की पुस्तक दिखाओ, तो कई बार बच्चों को भी अजीब-सा लगता है। लेकिन जब हम कहते हैं कि मैथ या साइंस की बुक दिखाओ, तो वही बात बहुत सामान्य लगती है। ऐसा होना पूरी तरह गलत नहीं है, क्योंकि भाषा समय के साथ बदलती रहती है और दूसरी भाषाओं के शब्द भी उसमें आते रहते हैं। लेकिन हमें यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि दूसरी भाषाओं के शब्द अपनाते-अपनाते हम अपनी मूल भाषा और उसके महत्व को न भूल जाएँ।

हमें अपने बच्चों को अधिक से अधिक हिंदी भाषा का ज्ञान देने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हें यह समझाना चाहिए कि हिंदी बोलना किसी भी तरह से कम पढ़ा-लिखा होने की निशानी नहीं है। अपनी भाषा पर गर्व करना और दूसरी भाषाओं का सम्मान करना, दोनों बातें एक साथ चल सकती हैं।

आजकल अपनत्व की भावना भी कहीं-कहीं कम होती दिखाई देती है और लोग रिश्तों को पहले जैसा महत्व नहीं दे पा रहे हैं। हम विदेशों की तरफ आकर्षित होते हैं, उनकी भाषा और संस्कृति को अपनाने की कोशिश करते हैं, वहीं दूसरी ओर कई विदेशी लोग हमारी भाषा, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं से जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

आप सभी ने कभी न कभी विदेशी लोगों को 'हरे राम, हरे राम' और 'हरे कृष्ण' जैसे भजनों पर भक्ति में भावविभोर होते हुए अवश्य देखा होगा। वे राम-राम जी, राधे-कृष्ण, राधे-राधे और जय श्रीराम जैसे शब्दों को बोलकर हमारी संस्कृति से जुड़ने का आनंद लेते हैं। जब दूसरे लोग हमारी भाषा और संस्कृति को सम्मान दे रहे हैं, तो हमें भी अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान और अपनापन बनाए रखना चाहिए।

हमें हिंदी का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करना चाहिए। हमारी राजभाषा ऐसी है, जो किसी को भी अपने रंग में रंग लेने की क्षमता रखती है। फिर इसे अपनाने में हम क्यों सकुचाएँ? हिंदी के माध्यम से हम अपनी भावनाओं को बहुत सहजता से व्यक्त कर सकते हैं। हिंदी में बोलते हुए हमें जरा भी शर्म या संकोच नहीं होना चाहिए।

चलो, अभी भी समय है। देश में हिंदी के उत्थान के लिए कार्य किए जा रहे हैं और आने वाले समय में हिंदी का और अधिक विस्तार हो सकता है। मैं यह नहीं कहती कि हम दूसरी भाषाओं को पढ़ना या बोलना छोड़ दें। बल्कि मेरा मानना है कि हिंदी के साथ दूसरी भाषाओं को भी थोड़ा-थोड़ा लेकर चलें, न कि दूसरी भाषाओं के साथ हिंदी को ही थोड़ा-थोड़ा लेकर चलें।

हमारी मूल भाषा और हमारी भावनाओं की भाषा हिंदी होनी चाहिए। हम भारतवासी हैं और हिंदी को भारत माता की बिंदी भी कहा जाता है। इसलिए हमें हिंदी बोलने में जरा भी हिचकिचाना या शर्माना नहीं चाहिए। हिंदी हमारी आन, बान और शान है।

हमें अपनी मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए और उसके प्रचार-प्रसार के लिए हमेशा अग्रसर रहना चाहिए। जितना अधिक हिंदी का सम्मान और प्रचार होगा, उतना ही हमारी भाषा समृद्ध होगी और देश की सांस्कृतिक एकता भी मजबूत होगी।

हिंदी केवल शब्दों का मेल नहीं,
यह हमारे मन के भावों की सहज अभिव्यक्ति है।
आइए, दूसरी भाषाएँ सीखें, उनका सम्मान करें,
लेकिन अपनी हिंदी को दिल से अपनाएँ और उसका मान बढ़ाएँ।

-नीतू रवि गर्ग

लेखक परिचय

नाम - नीतू रवि गर्ग "कमलिनी"
चरथावल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ...**नीतू रवि गर्ग "कमलिनी"**...जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...